दिनांक 29 सितम्बर, 2018

<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

जातिवाद को शिक्षा के माध्यम से ही मिटाया जा सकता है- राज्यपाल आनंदीबेन पटेल

- सांची विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला का समापन
- विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों को गांवों में जाकर बच्चों को पढ़ाना चाहिए- पटेल
- 8वीं से 10वीं तक के बच्चों को विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराया जाए-पटेल
- देश को सव्यसाची अर्जुन अर्थात 'ऑलराउंडर' की ज़रूरत - आनंदीबेन पटेल
- राज्यपाल महोदया ने ग्राम बिलारा के बच्चों को बांटे फल
- सांची विश्वविद्यालय ने गोद लिया है ग्राम बिलारा
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर आयोजित थी कार्यशाला
- मध्य प्रदेश शासन ने उपलब्ध कराए हैं 10 करोड़ रुपए
- 10 वर्षों तक सतत् चलेगी यह परियोजना

सांची बौद्धभारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन का लेखन विषय पर - दिवसीय कार्यशाला के अंतिम दिन समापन समारोह के मौके पर मध्य प्रदेश की राज्यपाल माननीया 5 आयोजित श्रीमति आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देश में फैले जातिवाद और क्षेत्रवाद को मात्र शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। उनका कहना था कि विश्वविद्यालय और कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों को चाहिए कि वो गांवों में जाएं और स्कूली बच्चों को पढ़ाएं उन्हें शिक्षित करें। ,

राज्यपाल महोदया का कहना था कि मध्य प्रदेश के सभी स्कूलों के वीं तक के बच्चों को भी 10 वीं से लेकर8 विश्वविद्यालयों और कारखानों का भ्रमण कराना चाहिए ताकि वे इससे प्रभावित हों और यहां तक पहुंचने को अपना लक्ष्य बना सकें। उनका कहना था कि छोटे बच्चों में नींव डालने के माध्यम से ही नई पीढ़ियों को सिखाया जा सकता है।

समापन समारोह में आज सांची विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्राम बिलारा के बच्चों ने भी शिरकत की। राज्यपाल महोदया ने इन बच्चों को फल भेंट किए। राज्यपाल महोदया ने अपने उदबोधन के दौरान महाभारत के अभिमन्यु के कथन का भी ज़िक्र किया। उनका कहना था कि जिस प्रकार अभिमन्यु ने मां के पेट में ही युद्ध की कला सीखी थीउस पर बाद के दौर में कई विदेशी वैज्ञानिकों ने शोध किए। इस को आधार मानते हुए हमारे देश में क्यों , शोध नहीं की जाती। महाभारत के ही पात्र अर्जुन का वर्णन करते हुए राज्यपाल महोदया ने कहा कि जिस तरह दोनों हाथों सेे धनुष चलाने की कला जानने वाले अर्जुन को सव्यसाची कहा जाता है उसी प्रकार के सव्यसाची की आज ज़रूरत है।

सांची विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ यज्ञेश्वर एसशास्त्री ने इस कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में बताया। . उन्होंने कहा कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन के लेखन को सांची विश्वविद्यालय ने एक चुनौती के रूप में लिया है और यह साल लंबा प्रोजेक्ट है। मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री ने इस कार्य के लिए सांची विश्वविद्यालय 10 परिय) छोटे मॉड्यूल-करोड़ रुपए की राशि प्रदान की है। इस प्रोजेक्ट को छोटे 10 कोोजनाओंके माध्यम से पूर्ण (किया जाएगा।

आधुनिक दौर में जिस तरह की चुनौतियां भारतीय बल्कि वैश्विक समाज झेल रहा है। उसका हल किस प्रकार से भारतीय दर्शन में मौजूद है उससे दार्शनिकों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया जाएगा। कुलपति महोदय का कहना था कि इस कार्यशाला के दौरान प्रस्तुत सभी शोधों को संकलित कर प्रकाशित किया जाएगा और इसके लिए एक संपादकीय मंडल का गठन भी किया जाएगा।

समापन समारोह के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री अदिति कुमार त्रिपाठी ने सभी अतिथियों और उपस्थित जनों सहित मीडियाकर्मियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। समापन समारोह के मौके पर रायसेन के अपर कलेक्टर श्री अमनवीर सिंह वैश्यडिप्टी कलेक्टर , श्रीमति मोहिनी शर्मा और रायसेन के पुलिस अधीक्षक श्री जे .एस. राजपूत उपस्थित थे। समापन समारोह के पहले प्रात: बजे आयोजित किए गए सत्रों में डॉ उमराव सिंह बिष्ट ने 10 **"स्वधर्म की अवधारणा"** को प्रस्तुत किया। डॉ बिष्ट का कहना था कि स्वधर्म से ही व्यक्ति स्वयं अनुशासित हो सकता है। भारतीय दर्शन में मौजूद विभिन्न उदाहरणों से उन्होंने अपने तर्कों को प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र में डॉ सुशिम दुबे ने **"पुरुषार्थ के अंतर्गत धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र"** की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

5 - DAY WORKSHOP ON
Explore Indian Wisdom
September, 2018

5 - DAY WORKSHOP ON
MODERN PERSPECTIVE